# भोखावाटी की महिलाओं का प्रजामण्डल आन्दोलन में योगदान

प्रताप सिंह

**सारांष – राजस्थान के प्रजामण्डल आन्दोलन में जयपुर रियासत के भोखावाटी अंचल की महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। इस भोात्र पत्र का उद्धेष्य महिलाओं का राजनीतिक संस्था प्रजामण्डल में किए गए कार्यो की भूमिका का अध्ययन करना है। राश्ट्रीय आन्दोलन के जननायकों की धर्मपत्नियाँ अग्रणी थी। जिसमें जानकी देवी बजाज, सावित्री देवी बजाज, केसर देवी भघेरिया, अंजना देवी चौधरी, सुमित्रा देवी खेतान, स्नेहलता देवी गाडिया, गंगा देवी कानोड़िया, रमादेवी मुरारका, भगवानी देवी सेकसरिया, महादेवी केजड़ीवाल, सुवृता देवी रूईया, इन्दुमती गोयनका, दुर्गावती देवी भार्मा, रमा देवी जोषी, किषोरी देवी भामरवासी, फूलादेवी मांडासी आदि प्रमुख थी। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, सुभाशचंद्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल के विचारों से प्रभावित थी।**

**महिलाओं का सामन्त"ाही द्वारा अमानवीय अत्याचारों का विरोध, बैठ बेगार को बंद करने, राश्ट्रवाद की भावना फैलाना, रचनात्मक कार्यो द्वारा जनजागरण तथा उत्तरदायी भाासन स्थापित करना मुख्य उद्धेष्य रहा। निश्कर्शतः प्रजामण्डल आन्दोलन की पृश्ठभूमि में अहम् योगदान था। वर्तमान में भोखावाटी की महिलाएँ दे"ा की विभिन्न गतिविधियों में अग्रणी भूमिका में है।**

**मुख्य भाब्द – उपेक्षित, जनजागरण, रचनात्मक कार्य, उत्तरदायी भाासन।**

**प्रस्तावना** – राजस्थान की जयपुर रियासत में अमरसर–नाण के शेखावत खाप के वंशजो (15 वी–20वीं सदी के मध्य तक) द्वारा शासित इकाई में सीकर तथा झुन्झुनूँ जिले के भू–भाग शामिल है। जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक इकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं। शेखावाटी के नाम से जाना जाता है। इसकी सीमाएँ उत्तर में हरियाणा राज्य का हिसार जिला, पूर्व में अलवर जिला, दक्षिण में जयपुर जिला, पश्चिम में नागौर जिला एवं उत्तर–पश्चिम में बीकानेर जिले को छूती है।[1]

**प्रमुख महिलाएँ** – भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में विभिन्न स्थानीय आन्दोलनों की अहम् भूमिका रही। जिसमें प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन भी अपनी विशेषता लिए हुए था। भारत के देशी रियासतों के प्रजामण्डल आन्दोलनों में महात्मा गाँधी की प्रेरणा से महिलाओं ने अपने योग, त्याग एवं संघर्ष करते हुए भाग लिया।[2] शेखावाटी के स्वतंत्रता आन्दोलन की अग्रिमपंक्ति के नेताओं की धर्मपत्नियों ने प्रजामण्डल आन्दोलनों में विशेष भूमिका निभाई। इन महिलाओं में जानकी देवी धर्मपत्नी जमनालाल बजाज, सावित्री देवी धर्मपत्नी कमलनयन बजाज, केसर देवी धर्मपत्नी मातादीन भघेरिया, अंजना देवी धर्मपत्नी रामनारायण चौधरी, विमलादेवी धर्मपत्नी कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी गीता देवी धर्मपत्नी गिरधारीलाल बजाज, सुमित्रा देवी धर्मपत्नी मदनलाल खेतान, स्नेहलता देवी धर्मपत्नी गिरधारीलाल गाडिया, गंगादेवी धर्मपत्नी भागीरथ कानोड़िया, रमादेवी धर्मपत्नी बसन्तलाल मुरारका, भगवानी धर्मपत्नी सीताराम सेकसरिया, सुवट देवी धर्मपत्नी सेठ सोहनलाल दूगड़, सुवृता देवी धर्मपत्नी रामनारायण रूईया, ज्ञानवती देवी धर्मपत्नी मोहनलाल लाठ, महादेवी धर्मपत्नी मोतीलाल केजरीवाल, इन्दुमती गोयनका धर्मपत्नी केसरदेव गोयनका, दुर्गावती देवी धर्मपत्नी पं. ताडके"वर शर्मा, उत्तमा देवी धर्मपत्नी ठाकुर देशराज, रमादेवी धर्मपत्नी लादूराम जोशी, रामे"वरी देवी धर्मपत्नी बंशीधर शर्मा, किशोरी देवी धर्मपत्नी सरदार हरलालसिंह, किशोरी देवी धर्मपत्नी ख्यालीराम भामरवासी, रमाकोरी धर्मपत्नी हरलालसिंह बूरी मांडासी, फूलादेवी धर्मपत्नी चौधरी आशाराम मांडासी, रामकोरी धर्मपत्नी चौधरी घासीराम, बिमलादेवी धर्मपत्नी श्रीकृष्ण शर्मा चिड़ावा, सिणगारी देवी धर्मपत्नी लेखराम प्रतापपुरा, म्होरी देवी धर्मपत्नी सुखदेवसिंह पातुसरी, गोरांदेवी धर्मपत्नी गंगासिंह हनुमानपुरा, रामप्यारी कुमावास पुत्री चौधरी जीताराम, रामप्यारी शर्मा आदि प्रमुख थी।[3]

**जयपुर प्रजामण्डल आन्दोलन** – सन् 1931 में जयपुर प्रजामण्डल की स्थापना सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा से कपूरचन्द पाटनी ने की।[4] सेठ जमनालाल बजाज की सलाह पर वनस्थली से हीरालाल शास्त्री को बुलाकर 9 नवम्बर 1936 को जयपुर प्रजामण्डल के संविधान में संशोधन करवाया। लेकिन जयपुर प्रजामण्डल

का नियमित कार्य फरवरी 1937 में प्रारम्भ हुआ।[5] प्रजामण्डल का मुख्यालय जयपुर में रखा गया। उसका प्रमुख उद्देश्य महाराजा की छत्रछाया में संवैधानिक उपायों से जनता के प्रति उत्तरदायी शासन की स्थापना करना, जनता को नागरिक अधिकार दिलाना और आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास करना था।[6]

**गतिविधियाँ** – जयपुर प्रजामण्डल के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर कस्तूरबा गाँधी के नेतृत्व में 10 मई 1938 को जयपुर के नथमल जी के कटले में स्त्रियों की एक विशेष सभा का आयोजन किया। इसमें शेखावाटी अंचल तथा वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं के साथ तीन–चार हजार महिलाओं ने भाग लिया था। इस अधिवेशन में प्रदर्शनी में ग्रामीण हस्तशिल्प कला, हाथकरघा आदि के उत्कृष्ट नमूने रखे गए थे। कस्तूरबा गाँधी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्तरदायी शासन की स्थापना के प्रयास में स्त्रियों को भी सहयोग करना चाहिए।[7] प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन पूर्ण रूप से सफल और प्रभावशाली रहा।[8]

जयपुर सत्याग्रह को समर्थन देने के लिए वर्धा, धुलिया, बम्बई आदि सहित शेखावाटी के प्रवासी महिलाएँ जयपुर आई। यहाँ स्त्रियों ने पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर योगदान दिया।[9] पुलिस ने जयपुर में 22 जनवरी 1939 को प्रजामण्डल के सत्याग्रहियों का एक जत्था जौहरी बाजार से रवाना हुआ। सरकार ने पुलिस को सत्याग्रहियों के गिरफ्तार करने का आदेश दिया तो जनता ने 'वन्देमातरम', 'प्रजामण्डल की जय' के आदि नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस सत्याग्रहियों को गाड़ी में ले जाने लगी तो कुछ महिलाओं ने गाड़ी रूकवा ली और सत्याग्रहियों के गले में पुष्पमालाएँ डालकर स्वागत किया।[10] गिरफ्तार किए गए सत्याग्रहियों के साथ सरकार का व्यवहार अनुचित था। इन्हें किसी से न तो मिलने दिया गया और न ही किसी डॉक्टर की सहायता दी गई।[11]

प्रजामण्डल आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी का जयपुर स्टेशन पर सत्याग्रहियों ने उपस्थित होकर उनका स्वागत किया। सत्याग्रहियों के शान्त एवं सुव्यवस्थित प्रदर्शन को देखकर महात्मा गाँधी ने अपने संदेश में कहा कि ''जयपुर प्रजामण्डल का आन्दोलन पूर्ण रूप से अहिंसात्मक तरीके से चल रहा है। यह खुशी की बात है कि जयपुर प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता जनता पर नियंत्रण रखने का पूर्ण प्रयास कर रहे हैं।''[12]

जयपुर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना के पश्चात 1938 ई. में शेखावाटी में किसान आन्दोलन पुनः आरम्भ हो गया। जब मार्च 1938 ई. में जयपुर प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने शेखावाटी क्षेत्र का दौरा किया और किसानों से कहा कि जिन ठिकानों ने सेटलमेंट की भू राजस्व दरें स्वीकार नही की हैं और जो अपनी मर्जी से लगान वसूल कर रहे हैं, उन्हें लगान न दे।[13] सितम्बर 1938 ई. में 'शेखावाटी जाट किसान पंचायत' ने जयपुर प्रजामण्डल के सहयोग से लाग–बागों के विरूद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया।[14] उन्होंने आम किसानों को यह कहने का प्रयास किया कि वे तब तक लाग–बाग और लगान न दें जब तक ठिकाना उचित छूट नही दे देता। यदि उन्हें पहले से तय लगान से अधिक देने के लिए बाध्य किया जाता है तो वे प्रजामण्डल के पास जाकर सहायता प्राप्त करें।[15]

सेठ जमनालाल बजाज अकाल राहत के कार्य करने की आड़ में शेखावाटी में काफी प्रभाव था। कृषक वर्ग की महिलाओं को उकसाने का काम कर रहे थे। 12 फरवरी 1938 को जमनालाल बजाज ने निषेधाज्ञा भंग कर जयपुर राज्य में प्रवेश कर अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिए गए।[16] इससे पूर्व महिलाओं ने अपनी सेवा और धनिकों ने अपनी थैलियाँ सेठ जमनालाल बजाज को सुपुर्द कर दी।[17]

सेठ जमनालाल बजाज तथा अन्य नेताओं की गिरफ्तारी का प्रजामण्डल ने भारी विरोध किया तथा सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने की माँग की कि एक विधानमण्डल का गठन किया जाए व राज्य की बिना पूर्व अनुमति के लोगों को एकत्रित होने का अधिकार स्वीकार किया जाए। प्रेस को स्वतंत्रता प्रदान की जाए। सभी लाग–बागें गैर वाजिब घोषित की जाए तथा सूखा प्रभावित क्षेत्रों से भू राजस्व रद्द किया जाए।[18]

महात्मा गाँधी ने प्रेस द्वारा विरोध करते हुए कहा कि सेठ जमनालाल बजाज तथा उनके साथियों को शीघ्र नही छोड़े गए तो कांग्रेस इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर का मुद्दा मान सत्याग्रह करेगी।[19] इसी बीच सीकर एवं शेखावाटी के किसान जत्थे सत्याग्रह में शिरकत करने के लिए जयपुर पहुँचने लगे थे। जयपुर में

सत्याग्रहियों की एक विशाल सभा हुई। जिसमें हजारों स्त्रियों ने भाग लिया। शेखावाटी में भी जयपुर प्रजाण्डल सत्याग्रह के प्रमुख केन्द्र झुन्झुनूँ, बगड़, चिड़ावा, मुकुन्दगढ़, नवलगढ़, चिराणा, उदयपुरवाटी, गुढ़ा गौड़जी, बिसाऊ, रींगस, सीकर, लक्ष्मणगढ़, रामगढ़, अमरसर–नाण, सूरजगढ़ आदि बन गए। यहाँ स्थान–स्थान पर सभाएँ होने लगी। उन सभाओं में गिरफ्तारी व लाठीचार्ज किया गया।[20] इस सत्याग्रह में भाग लेने वाले किसानों की स्त्रियों पर घोड़े दौड़ाए गए और चोटें आई। इनके उपचार के लिए कलकत्ता, दिल्ली तथा बम्बई के व्यापारियों ने अड़तीस हजार रूपये की आर्थिक सहायता की।[21]

सीकर में प्रजामण्डल आन्दोलन के सत्याग्रह में स्त्रियों का नेतृत्व करने वाली महिलाओ में प्रमुख रमादेवी जोशी, अंजना देवी चौधरी, रामे"वरी देवी शर्मा आदि थी।[22] श्रीमती भारती देवी धर्मपत्नी सुन्दरलाल वाजपेयी ने सीकर से जयपुर पहुँचकर सत्याग्रह किया। इन्हें गिरफ्तार कर तीन माह की सजा[23] 24 फरवरी 1939 को आगरा से जयपुर सत्याग्रह परिषद ने सम्पूर्ण भारत में 1 मार्च 1939 को किसान दिवस मनाने की घोषणा की। इस आयोजन में प्रभात फेरियाँ व जुलूस तथा सार्वजनिक सभाएँ की गई। रिजाणी गाँव की महिलाओं का जत्था झुन्झुनूँ आ रहा था। किन्तु पुलिस ने बेरहमी से पिटाई कर वापस रिजाणी भेज दिया।[24] 15 मार्च 1939 को झुन्झुनूँ में सरदार हरलालसिंह ने अपनी गिरफ्तारी दी तो ब्रिटिश सरकार के नेतृत्व में पुलिस ने महिलाओं के जुलूस पर घोड़े दौड़ाए और गोलियाँ बरसाई। महिलाएँ तिरंगा हाथ में लिए लहुलुहान गिर पड़ी। किन्तु तिरंगे को झुकने नही दिया और इन्कलाब जिन्दाबाद, भारत माता की जय, महात्मा गाँधी की जय और ब्रिटिश हुकुमत का नाश हो आदि नारे लगाए।[25]

जयपुर सत्याग्रह में श्रीमती दुर्गावत्ती देवी शर्मा के नेतृत्व में महिलाओं का प्रथम जत्था 18 मार्च 1939 को जयपुर पहुँचा। जिनमें प्रमुख महिला सत्याग्रही फुलादेवी, रामकोरी देवी, केसरदेवी, गोरा देवी, सिंगारी देवी, मोहरी देवी आदि थी। इन महिलाओं ने जौहरी बाजार में सत्याग्रह किया और गिरफ्तारियाँ दी। इन्हें चार–चार माह की सजा देकर केन्द्रीय कारागाह में रखा गया। 50 महिला सत्याग्रहियों के दूसरे जत्था के नेतृत्व श्रीमती किशोरी देवी ने किया। इस जत्थे में सहयोगी हरकोरी देवी थी। इसमें झुन्झुनूँ क्षेत्र की महिलाएँ अधिक थी। इन महिला सत्याग्रहियों को गिरफ्तार नही किया गया। क्योंकि इससे पहले ही सरकार ने प्रजामण्डल का समझौता होने के कारण सत्याग्रह आन्दोलन 19 मार्च 1939 को ही स्थगित कर दिया गया।[26] रींगस के खादी आश्रम की 22 महिलाओं के जत्थे ने जौहरी बाजार में सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तारी दी। इन्हें 4 से 6 माह तक के मध्य सजा सुनाई गई।[27] गोविन्दगढ़ चरखा संघ की अनेक महिलाओं ने जयपुर में सत्याग्रह कर गिरफ्तारी इनमें प्रमुख सुमित्रा देवी खेतान, सुशीला विद्यावती, इन्द्रा, शिवदेवी आदि प्रमुख थी। इन महिलाओं को 3 से 6 माह तक की सजा सुनाकर जयपुर के केन्द्रीय कारागृह मे रखा गया।[28]

रामगढ़ की सुमित्रा देवी खेतान ने प्रजामण्डल के सत्याग्रह के जत्थे का नेतृत्व किया। उनकी गोद में दो माह का बालक था। तथा दूसरे हाथ में तिरंगा झंडा था। केसरिया साड़ी पहने जत्थे का नेतृत्व कर रही थी। उस समय पुलिस ने गिरफ्तार कर चार माह की सजा सुनाई[29] अनुसुईया देवी बगड़का की प्रेरणा से श्रीनिवास बगड़का ने बगड़ कस्बे में प्रजामण्डल आन्दोलन को आर्थिक एवं नैतिक समर्थन प्रदान किया।[30] चिड़ावा में मातादीन भघेरिया की पत्नी केसरदेवी ने महिला सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया।[31] रामप्यारी (ज्ञानबाई) कुमावास अन्य सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद में सत्याग्रह किया। किशोरी देवी ने सत्याग्रही महिलाओं के लिए भामरवासी गाँव के मोहनपुरा आश्रम में कार्य किया।[33] रामप्यारी देवी शर्मा ने अपने शिक्षक पद का त्याग कर सत्याग्रहियों के लिए झुन्झुनूँ केन्द्र के संगठन को सम्भाला।[34] सिणगारी देवी ने महिला सत्याग्रहियों के प्रथम जत्थे में जयपुर में अपनी गिरफ्तारी दी।[35]

4 अप्रेल 1939 को झुन्झुनूँ में प्रजामण्डल के वार्षिक उत्सव में वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं ने जुलूस निकाला। श्रीमती सुभ्रदा जोशी की अध्यक्षता में एक सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमें हजारों महिलाओं ने भाग लिया। नवलगढ़ की भगवानी देवी सेकसरिया ने अपने ओजस्वी भाषण से महिलाओ में त्याग की एक नई जागृति पैदा की। सितम्बर 1944 में रामगढ़ कस्बे में जयपुर राज्य प्रजामण्डल तथा सीकर जिला कमेटी की ओर से तृतीय सीकर जिला राजनीतिक अधिवेशन में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता वीर अर्जुन के सम्पादक कृष्णचन्द्र विद्यालंकार की पत्नी ई"वरी देवी ने की।

मुकुन्दगढ़ की रमादेवी मुरारका ने उद्घाटन किया। इन्होंने प्रजामण्डल सत्याग्रह के उद्देश्यों के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर बल दिया।[36]

निष्कर्षतः प्रजामण्डल आन्दोलन के द्वारा उत्तरदायी शासन की माँग के लिए जन आन्दोलन हुए। जिनमें महिलाओं की अहम् भूमिका रही। प्रजामण्डल एक राजनीतिक संस्था थी। जिनका मुख्य उद्देश्य सामन्तशाही द्वारा प्रजा पर किए गए अमानवीय अत्याचारों जनता का शोषण, बैठ बेगार को बन्द करने तथा उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सत्याग्रह में शेखावाटी की महिलाओं ने अपने शौर्य एवं साहस से सफल बनाया। इन्होंने शेखावाटी के गाँव–गाँव में घूमकर प्रजामण्डल की विचारधारा को घर–घर पहुँचाया। इस आन्दोलन में रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा जन जागरण आरम्भ किया। कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप में सामाजिक उत्थान का कार्य किया और वहीं अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय भावना को जगाने का कार्य भी किया। उत्तरदायी शासन की माँग के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**सन्दर्भ :–**


1. कालीपहाड़ी, रघुनाथसिंह (वि.स. 2005) : शेखावाटी प्रदे”ा का राजनीतिक इतिहास, झुन्झुनूँ, ठा. मल्लूसिंह स्मृति ग्रन्थागार, पृ.सं. 2
2. शाह, प्रमोद (1994) : मंचिका अधिवे”ान वि”ोषांक, दिल्ली, अखिल भारतीय युवा मंच, पृ.सं. शेखावाटी के किसान आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका
3. सिंह, मोहन (1990) : शेखावाटी में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, झुन्झुनूँ, कविता प्रका”ान, पृ.सं. 154
4. डॉ. देवाराम (2016) : राजस्थान के क्षेत्रीय इतिहास में प्रजामण्डल आन्दोलन का महत्व, जोधपुर, मिनर्वा पब्लिके”ान, पृ.सं. 59
5. पांडे, डॉ. राम (1994) : पीपुल्स मुवमेंट इन राजस्थान, जयपुर, शोधक, पृ.सं. 48
6. जयपुर प्रजामण्डल–बस्ता संख्या 7, फाईल नं. 6, पृ.सं. 230, रा.रा.अ., बीकानेर
7. जयपुर प्रजाण्डल–बस्ता संख्या 29, फाईल नं. 1, रा.रा.अ., बीकानेर
8. शास्त्री, हीरालाल (1970) : प्रत्यक्ष जीवन”ाास्त्र, पृ.सं. 559
9. द हिन्दुस्तान टाईम्स, 11 मार्च 1939, ने.मे.लो., नई दिल्ली
10. जयपुर प्रजामण्डल–22 फरवरी 1939, फाईल नं. 4, बस्ता संख्या 24, पृ.सं. 67, रा.रा.अ., बीकानेर
11. जयपुर प्रजामण्डल–4 मार्च 1939, फाईल नं. 4, बस्ता सं. 24, पृ.सं. 72, रा.रा.आ., बीकानेर
12. जयपुर प्रजामण्डल–18 मार्च 1939, फाईल नं. 4, बस्ता सं. 24, पृ.सं. 52, रा.रा.अ., बीकानेर
13. जयपुर ज्यूडि”ायल रिकॉर्ड, फाईल नं. ज–2–2549, भाग–5, बस्ता नं. 70, रा.रा.अ., बीकानेर। वीर अर्जुन, 25 मई 1938, पृ.सं. 4
14. जयपुर ज्यूडि”ायल रिकॉर्ड, फाईल नं. 2549, भाग–2, बस्ता नं. 70, रा.रा.अ., बीकानेर शेखावाटी के एस.पी. का जयपुर आई.पी. के नाम पत्र, अक्टूबर 1938
15. जयपुर ज्यूडि”ायल रिकॉर्ड, फाईल नं. ज–7483, भाग–6, 1938, रा.रा.अ., बीकानेर आई.जी.पी. जयपुर द्वारा जयपुर के प्रधानमंत्री को प्रेषित डी.ओ. नं. 684 व 698
16. जयपुर ज्यूडि”ायल रिकॉर्ड, फाईल नं. ज–2–7483, भाग–6, 1938, रा.रा.अ., बीकानेर
17. उपाध्याय, हरिभाऊ (1966) : राजस्थान स्वतंत्रता के पहले और बाद में, अजमेर, पृ.सं. 76
18. डॉ. घासीराम (2007) : किसान आन्दोलन जनित चेतना और स्वाधीनता संग्राम, जयपुर, आलेख पब्लि”ार्स पृ.सं. 213–214
19. द हिन्दुस्तान टाइम्स, 26 जनवरी 1939
20. ठाकुर, दे”ाराज (1961) : शेखावाटी में जन जागरण, पृ.सं. 47
21. रींगस किसान सम्मेलन, सभापति राधावल्लभ अग्रवाल, 1946, पृ.सं. 4
22. शर्मा, डॉ. रामगोपाल (2002) : राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन, भाग–3, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती, समारोह समिति, पृ.सं. 163

23. कोठारी, मनोहर (2003) : भारत के स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान, जयपुर, राजस्थान स्वर्ण जयन्ती प्रका”ान समिति, पृ.सं. 410
24. शर्मा, डॉ. रामगोपाल (2002) : वही, पृ.सं. 163–164
25. वर्मा, मदनलाल (2001) : शेखावाटी अंचल–555 वर्ष, जयपुर, शेखावाटी अंचल, पृ.सं. 64
26. कोठारी, मनोहर (2003) : वही, पृ.सं. 419
27. शर्मा, डॉ. रामगोपाल (2002) : वही, पृ.सं. 159
28. कोठारी, मनोहर (2003) : वही, पृ.सं. 420
29. जो”ाी, सुमने”ा (1973) : वही, पृ.सं. 626
30. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 275
31. आजाद, महे”ा (1989) : झुन्झुनूँ जिले की जुझारू महिलाएँ, चिड़ावा, आजाद इन्फोरे”ान ब्यूरो, पृ.सं. 38
32. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 275
33. जो”ाी, सुमने”ा (1973) : वही, पृ.सं. 622
34. सिंह, मोहन (1990) : वही, पृ.सं. 282–283
35. वर्मा, मदनलाल (2001) : वही, पृ.सं. 65
36. भारद्वाज, लक्ष्मण (2013) : आपणो रामगढ़, महाराष्ट्र, 1/603, श्री कृष्णपुरम, पृ.सं. 180